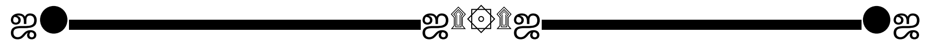
सुगंधा

(गजल संग्रह)

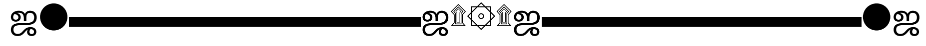
जगदानन्द झा 'मनु'



समर्पण

ई गजल संग्रह “सुगंधा” सादर समर्पित अछि हमर प्रियतमा हमर संगनी

जे सदति हमर करेगामे बास करैत छथि आ जिनक प्रेरणा आ प्रयासक बुते आई हम अपने सभक सोंझा छी।



क्रम

1

ई नजरि जे अहाँकेँ लाजे झुकल अछि

प्राण लेलक हमर जे आँचर खसल अछि

देखलहुँ एक झलकी जखने अहाँकेँ

लागल रूप ई मोनेमे बसल अछि

सत कहै छी अहाँकेँ हम मानियो लिअ'

बिनु अहाँ हमर जीवन शुन्ना बनल अछि

हम दुनू मिलि जँ जीवनमे संग चललहुँ

प्रेम जग देखतै मनमे जे भरल अछि

बिनु अहाँके तँ पेने नै जगसँ जेबै

हाँ सुगन्धाक सुनि ली तेँ 'मनु' बचल अछि

(बहरे असम, मात्रा क्रम - २१२२-१२२२-२१२२)

****

2

भूतलेलौं किए एना मित बना लिअ

छोड़ि सगरो बहानाकेँ प्रित लगा लिअ

वचन नै देब हम नै किछु मोल एकर

आउ चलि संगमे हमरो अप्पना लिअ

जीवनक काँट ई   कोना बिछब एते

संग हमरा लऽ मोनक संसय हटा लिअ

जुनि बुझू आन जगमे सपनोसँ कखनो

बुझि कऽ अप्पन कनी छू ठोरसँ सटा लिअ

रूप सुन्नर अहाँकेँ ई ओहिपर बदरा

जीब कोना करेजामे "मनु" बसा लिअ

(बहरे असम, मात्रा क्रम : २१२२-१२२२-२१२२)

****

3

करेजामे हमर साजन आबि गेलै

मनक सभ तार बटगबनी गाबि गेलै

हुनक मुस्कीसँ सगरो दुनियाक सम्पति
करेजा जानि नै कोना पाबि गेलै

बलमकेँ दर्द जानि कए मोन कनिको
कतेक दुख अपन चट्टे दाबि गेलै

बनेलहुँ अपन जखनसँ संगी बलमकेँ
जिला भरि केर लोकक मुँह बाबि गेलै

बसने छलहुँ मन मंदिरमे जिनक छबि
दया भगवानकेँ ओ ‘मनु’ पाबि गेलै
(बहरे करीब, मात्रा क्रम – १२२२-१२२२-२१२२)
****

4

अहाँ बिनु नै सुतै नै जागैत छी हम
कही की राति कोना काटैत छी हम

अहाँक प्रेम नै बुझलहुँ संग रहितो
परोक्षमे कते छुपि कानैत छी हम

करेजा केर भीतर छबि दाबि रखने

अहीँकेँ प्राण अप्पन मानैत छी हम

बुझू नै हम खिलाड़ी एतेक कचिया

अहाँ जीती सखी तेँ हारैत छी हम

अहाँ जगमे रही खुश जतए कतौ 'मनु'

दुआ ई मनसँ सदिखन मांगैत छी हम

(बहरे करीब, मात्रा क्रम : 1222- 1222- 2122)
****

5

गालपर तिलबा कते शान मारैए

निकलु नै बाहर सभक जान मारैए

जतअ देखलौं अहींपर नजरि सभकेँ

सभ तरे तर नजरिकेँ वाण मारैए

तिर्थमे पंडित तँ मुल्ला मदीनामे

सभ अहीँकेँ राति दिन तान मारैए

अछि अहीँकेँ मोहमे बूढ़ नव डूबल
देखिते मुँह फारि मुस्कान मारैए

काज कोनो नै बनेए जँ जीवनमे
'मनु' अहीं लग फूल आ पान मारैए
(बहरे कलीब, मात्रा क्रम – २१२२-२१२२-१२२२)
****

6
ई हँसी हमर सुनलौं अहाँ
दर्दकेँ नै तँ बुझलौं अहाँ

दाँतकेँ बीचमे जीभ सन
मोनमे अपन मुनलौं अहाँ

नै हमर मोनकेँ चिन्हलौं
मुँह किए देख घुमलौं अहाँ

प्रेमकेँ हमर हँसि बिसरलौं
मोनकेँ तोरि झुमलौं अहाँ

हाथ संगे खुशीकेँ पकरि

हृदय ‘मनु’ केर खुनलौं अहाँ

(बहरे मुतदारिक, २१२-२१२-२१२)

****

7

किए तीर नजरिसँ अहाँकेँ चलैए
हँसी ई तँ घाएल हमरा करैए

मधुर बाजि खन-खन पएरक पजनियाँ
हमर मोन रहि रहि कए डोलबैए

छमकए हबामे अहाँकेँ खुजल लट
कतेको तँ दाँतेसँ   आङुर कटैए

ससरि जे जए जखन आँचर अहाँकेँ

जिला भरि करेजाक धड़कन रुकैए

अहीँकेँ तँ मुँह देखि जीबैत 'मनु' अछि

बिना संग नै साँस मिसियो चलैए

(बहरे - मुतकारिब, मात्राक्रम : 122-122-122-122)

****

8

करेजामे अपन हम की बसेने छी

अहाँकेँ नामटा लिख-लिख नुकेने छी

बितैए राति नै कनिको कटैए दिन

अहाँकेँ बाटमे   पपनी सजेने छी

हमर ठोरक हँसीकेँ   देख नै हँसियौ

अहाँ हँसि लिअ दरद तेँ हम दबेने छी

हमर जीवन अहाँ बिनु नै छलै जीवन

मनुक्खसँ देवता   हमरा बनेने छी

निसा ई गजलमे आँखिक अहीँकेँ 'मनु'

बुझू नै हम महग   ताड़ी चढ़ेने छी

(बहरे हजज, मात्रा क्रम – १२२२-१२२२-१२२२)

****

9

उठलै करेजामे दरदिया हो राम

भेलै पिया जुल्मी बहरिया हो राम

कुक कोइलीकें सुनि हिया सिहरल हमर

आँखिसँ बहे नोरक टघरिया हो राम

साउन बितल जाए सुहावन मन सुखल

एलै पियाकेँ नै कहरिया हो राम

जरलै हमर जीवन बिना प्रेमक आगि

लागल हमर सुखमे वदरिया हो राम

जीवन 'मनु'क बनलै बिना तेलक दीप

कोना जरत मोनक बिजुरिया हो राम

(बहरे सरीअ, मात्रा क्रम : २२१२-२२१२-२२२१)

****

10

जनमेसँ टूगर हम प्रेमक लेल तरसैत रहलौं
भेटल किरण एक आशक तकरो तँ मिझबैत रहलौं

दुख एहिकेँ केखनो नै की प्रेम किछु नै पएलौं
अफसोस की एहि दुनिआमे चुप्प जीबैत रहलौं

चमकैत सभ बस्तुकेँ हम अनजानमे सोन बुझलौं
सोना जखन हम पएलौं नै बुझि कऽ हरबैत रहलौं

किछु नै बचल आब अपनेकेँ लूटबअमे लागि गेलौं
ताड़ी कटीयाक मेलामे होस हारैत रहलौं

आँखिक बिसरि आश गेलौं अनुराग सभटा बिसरलौं
गेलौं हराएब दुख ‘मनु’ छन सुखक बिसरैत रहलौं

(बहरे मुजस्सम वा मुजास, मात्रा क्रम-२२१२-२१२२/२२१२-२१२२)

****

82

जेना जेना राति बीतल जाइए

तेना तेना देह धीपल जाइए

जुल्मी संगे संग रहितो हे सखी

नहिए हुनकर मोन जीतल जाइए

योवनमे पुरबा बसातक जोड़ छै

साबरिया बिनु नै तँ जीबल जाइए

डूबल निनमे सगर दुनिया छै जखन

बीया प्रेमक एतऽ छीटल जाइए

भोरे उठिते प्रेम बोरल 'मनु' छलौं

लाजे मरि मुँह आब तीतल जाइए

(मात्रा क्रम : २२२-२२१२-२२१२)

****

83

देखलौं जखनसँ अहाँकेँ होस गेलौं बिसरि हम

आगि खऽर बिनु लेसने सौँसेसँ गेलौं पजरि हम

एकटा मुस्की अहाँकेँ प्राण लेलक लय हमर

खा कऽ मोने मोन मुँगबा चट्ट गेलौं पसरि हम

अछि निसा चानक अहाँमे भ्रमित केने रातिमे

मुँह अहाँकेँ मोरिते बिनु पानि गेलौं पिछरि हम

स्वर्ग पेलौं बिनु अहाँ ओ स्वर्ग भेलै नर्क सन

छोरि छारि स्वर्गकेँ पाछूसँ गेलौं ससरि हम

खुजल आँखिक ‘मनु’क सपना प्रगट भेलौं जगतमे

देख निरमल नेह   बिनु बरखाक गेलौं झहरि हम

(मात्रा क्रम- २१२२-२१२२-२१२२-२१२)

****

83

दर्द करेजाक देखाएब तँ अहाँ गानब की

हमर बात कनी सपनोमे अहाँ मानब की

अहाँ कहलौं पुरुषक प्रेम गोबर आ रुई

करेज चीरो कs देखाएब तँ अहाँ कानब की

दोख एकेटामे होइ छैक सभमे कत्तौ नहि

सभकेँ संग हमरो अहाँ ओहिमे सानब की

अहाँ कहैत छी सभठाम अन्हारे-अन्हारे छै

इजोरियासँ आँखि मुनि अन्हरिया छानब की

एक बेर हमरोपर भरोसा कय कऽ देखू

प्रेम केकरा कहैत छैक 'मनु'सँ जानब की

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१७)

****

84

अहाँ पिआर करु हमरा हमर बसन्ती पिया
अपन बाबूक नहि हम आब रहलहुँ धिया

बहुत जतनसँ सोलह बसन्त सम्हारलहुँ

आब नहि सहल जाइए हमर टूटेए हिया

नेह रखने छी नुका कए कोंढ़ तर अहाँ लए

रुकि नहि जुलूम करु हमर तरसेए जिया

आब आँकुर फूटल पिआरक अछि चारू दिस

अहाँ जे रोपलौं करेजामे हमर प्रेमक बिया

आउ हमरा सम्हाइर लिअ हमर सिनेहिया
अहाँकेँ सप्पत दै छी करियौ नै ‘मनु’ एना छिया

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण – १८)

****

85

जँ कहीयो हमरा प्रेम केलहुँ तँ ओकर सप्पत मानियो जाउ

कुटि-कुटि कऽ हम प्रेम केने छी हमर मनोरथ बुझियो जाउ

सभ तरहे हम अहींकेँ बुझलौं अपन अहाँकेँ मानलौं हम

मोनक हाल बनल की हमर आबि कनीक अहाँ सुनियो जाउ

छन-छन हमर बीतैए कोना कऽ बिन अहाँक दुख बुझतकेँ

नामेकेँ हम जीबैत छी हमर जीवनकेँ मुइल बुझियो जाउ

हाड़ माँस गलि गेल हमर सभटा प्राण बचा कए रखने छी

सहि नै सकै छी विरह आगि 'मनु' घुरि अहाँ कनी आबियो जाउ

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-२४)

''

86

हमर अहाँकेँ प्रीतक खिस्सा आब दुनियाँ बिसरत नहि
युग-युग तक लोकक मोनसँ अपन नाम घटत नहि

सूर्य चानकेँ प्रेमालापसँ ई दुनियाँ प्रकाशित अछि भेल
हुनकर संग बिनु कखनहुँ ई दुनियाँ चमकत नहि

भोला शंकर डमरू बजाबथि पारवती नाचैत अँगना
हुनकर दुनूकेँ इक्षा बिनु कएखनो श्रृष्टि चलत नहि

कृष्ण नचाबथि सगरो गोकुल गोबरधन पर्वत उठा
बिनु राधिका संग कएखनो हुनक मुरली बजत नहि

फूल भोंडाकेँ प्रीतक खिस्सा सभतरि बहुत पुरान भेलै
'मनु' 'सुगँधाक' नाम बिनु प्रेम कथा आब गमकत नहि

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-२२)

''

87

चान सँ सुन्नर सजनी हमर एहेन नै केखनो सोचलौं हम
भाग में लिखलाहा छल हमर जे अहाँ केँ अपन बनेलौं हम

एक चान अछि धरती कँे ऊपर जेकरा सभ कियो देखते छी
दोसर हमर हृदय में बसल पाँज में जकरा भरलौं हम

अहाँ छी सुन्नर हे मनमोहनी तन मन सभ निश्छल अहाँ कँे
एहि सादगी पर मरि मीटलौं अहीँक पूजा करै लगलौं हम

आँखि मुनि आ खोलि हम सामने हमर अहाँ रहै छी सदिखन
सुन्नर छबी निहारैत अहाँ कँे अहीँक लौलसा में रहलौं हम

चन्ना ताराक संग जेना छैक सुख दुख पल-पल जीबन भरि
रहि जीबन भरि 'मनु' सुगँधाक जीबन अहाँ कँे सोपलौं हम

वर्ण- २४
,,,

88

हृदयसँ सटा तँ लिअ

अहाँ प्रीत लगा तँ लिअ

हम जन्मसँ अहाँकेँ छी

प्रियतम बना तँ लिअ

सभकेँ छोरने छी हम

हृदयमे बसा तँ लिअ

नै हमरा बिसरल छी

ई हमरो जता तँ लिअ

आब दिन बीते नै राति

मरबसँ बचा तँ लिअ

जीनै सकी बिनु अहाँकेँ

नै हमरा कना तँ लिअ

ई नोर विरहकेँ अछि

मिलनकेँ बना तँ लिअ

सुगँधा अहाँ 'मनु'केँ छी

ई सभकेँ बता तँ लिअ

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-९)

,,

89

अहाँ हँसैत रही हमरा देखैत रही
अहाँके नव-नव गीत सुनाबैत रही

अहाँ रुसल रही हम मनाबैत रही
गुणगान अहाँक सगरो गाबैत रही

अहाँ राति भरि निचैनसँ सुतल रही
जागि उठिते अहाँकेँ हम देखैत रही

अहाँ केखनो हँसियोसँ पाछु जँ देखब

ताहिखन हम जीबैत नै मरैत रही

हमर जीवन अहाँ लेल बनल अछि
जीवन भरि अहींक लेल जिबैत रही

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१५)

,,,

90

अहाँक चमकैत बिजली सँ काया ओई अन्हरिया रातीमे
आह ! कपार हमहुँ की पएलहुँ मिलल जे छाती छातीमे

सुन्नर सलोनी मुह अहाँ केँ कारी घटा घनघोर केशक
होस गबा बैसलौं हम अपन पैस गेल हमर छाती मे

बिसरि नै पाबि सुतलो-जगितो ध्यान में सदिखन अहीं केँ
अहाँक कमलिनी सुन्नर आँखि देखलौं जे नशिली राती में

बिधाता बनेला निचैन सँ   धरती पर पठबै सँ पहिले
मिलन अहाँ केँ अंग अंग में जे नहि अछि दीप आ बाती में

सुन्नर अहाँ छी सुन्नर अछि काया अंग-अंग सुन्नर अहाँ केँ
नै कहि सकैत छी एहि सँ बेसी अहाँक बर्णन हम पाती में

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-२२)

****

91

टीस उठैए करेज में कोना कहु बितैए की
कोन लगन लगेलौं अहाँ सँ याद अबैए की

जतय देखु जिम्हर देखु अहीँ केँ देखै छीक
कोना बितत दिन-राति कोना कए बितैए की

की करू कोना करू आब नै किछ फुराईए

रहि-रहि क ' याद अहुँ केँ हमर आबैए की

प्रियतम 'मनु' केँ किएक इना तरपाबै छी
मोन में लहर उठल से अहुँ केँ लगैए की

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१७)
****

92

की-की बनब चाहै छलौं हम की बनि गेलौंह
सुगँधा   अहीँ केँ सनेह में हम सनि गेलौंह

आस हमर करेज केँ करेजे में रहि गेल
अहाँक पिआर में परि सबके जनि गेलौंह

रहल नहि होश हमरा दुनियाँक दुख केँ
अहाँक लोभ में हम भटकैत कनि गेलौंह

सैदखन ख्याल में अहीं कए बसेने रहै छी
सब कुछ हम अपन अहीं केँ मनि गेलौंह

हमर स्नेह जे अहाँ सँ स्नेह नहि रहि गेल
हमर मोन में बसि अहाँ प्राण बनि गेलौंह

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१७)
****

93

छुपि-छुपि दिन राति हम अहाँक छवि निंघारै छी
एक अहाँ छी की नहि हमरा करेजासँ लगबै छी

एक दिन पूरा होयत हमरो करेजक कामना
अहुँ कि याद करब की ककरासँ नेह लगाबै छी

एक दिन ओहो एतै जहिया हमर स्नेहिया एबै
तखन अहीँकेँ निंघारब एखन छबि निंघारै छी

नहि मिलन कए ओ घडी आब अहाँ रोकल करू
ओ मधुर घडी जल्दी आबे हम इंतजार करै छी

हमर जे चाहत अछि से सुनायब हम जरुर
नै रोकने अहाँ हमरा आब कहै सँ रोकी सकै छी

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१९)
****

94

जखन-जखन सोचब हमरा
अपनेमे अहाँ पायब हमरा

हमर शव्द गीत बनि कानमे
कचोटे तँ अहाँ सोचब हमरा

हम दूर छी तँ कोनो बात नहि
मोनमे अप्पन पायब हमरा

दू काया एक प्राण छी हम दुनू
भेटब तँ अहाँ बुझब हमरा

अहाँ कहलौं जे हम अहाँक छी
मरला बादो निभायब हमरा

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१२)

****

95

प्रियतम अहाँकेँ इआदमे जीनाइ भेल मुस्किल
जीवैत तँ हम छीए नहि मरनाइ भेल मुस्किल

किना सुनाऊ हाल करेजाक खंड कै हजार भेल
सभमे अहाँक नां लिखल पढ़नाइ भेल मुस्किल

लाख समझेलौंह मोनकेँ ई बनल अछि पागल
आबि अहीँ समझा दिअ समझेनाइ भेल मुस्किल

केखनो-केखनो सोची पाहिले तँ हाल एना नै छल
जखनसँ भेटलौं अहाँसँ रहनाइ भेल मुस्किल

हमर मन मंदिरमे सदिखन मूरत अहींकेँ
बिना ओकर पूजा केने 'मनु' जिनाइ भेल मुस्किल

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१९)
****

96

पहड़ राति बीत गेल निन्न नहि आबैए हमरा
रहि-रहि कऽ अहाँक सुन्नर याद सताबैए हमरा

सुन्नर-मोहनी छवि अहाँक आँखिमे जए बसोने छी
सिनेहिया सलोनी हमर बड्ड तरसाबैए हमरा

घरी-घरी बजाबै छी   अहाँ अपन चंचल इशारासँ
मुइन लिअ कोना कऽ अपन आँखि काचोतैए हमरा

जुनि खसाबू एतेक अहाँ अप्पन दाँतक बिजुडिया
एतेक इजोरिया अहाँक   आब तरपाबैए हमरा

मधुर मिलन होएत अपन कखन कोन बिधिसँ
ओहीकेँ विचारेसँ करेजा हमर   जुराबैए हमरा

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-२०)

****

97

नुका-नुका कऽ सदिखन कनै छी हम
घुटि-घुटि कऽ दिन राति मरै छी हम

लगन एहन है छै छल नै बुझल
विरहकेँ आगिमे आब जरै छी हम

छन भरिकेँ दूरी सहलो नै जाइए
छन-छन घुटि-घुटि कऽ रहै छी हम

सभ तँ बताह कहैत अछि हमरा
हुनक ध्यानमे रमल चलै छी हम

जाहि बाट पर चलि प्रियतम गेला
'मनु'ओ बाटकेँ निहारि तकै छी हम

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१४)

****

98

टूटल करेज राखब नहि एखन हम सिखने छी

किछु अपने तोड़लहुँ किछु भागे एहन रखने छी

जिनका लूटेलौं हम अपन सिनेह भरल करेज
हुनकासँ दूर होबाक माहुर अपनेसँ चीखने छी

सोचने तँ छलहुँ एक दिन जीवनमे होएत रंग
ओहि रंग भरल दुनियाँसँ कतेक दूर एखने छी

दोसरसँ करू की शिकाति 'मनु' अपने नै बुझलक
जिनका केलौं नेह करेज तोरैत हुनका देखने छी

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-२०)

****

99

करेजमे बसा कऽ कनी हमरो तँ पिआर करु
ओहि काबिल तँ छी अहाँ हमरासँ दुलार करु

छोरि एलहुँ जगमे अहींकेँ खातिर सभ किछु
आब अहाँक ऊपर अछि की अहाँ स्वीकार करु

हमरो तँ मोनमे अछि की कियो अपना मानेए

दुनिआमे कियो तँ होइ जेकरासँ पिआर करु

हम सिखलौं दुनिआमे पिआर केनाइ सभसँ
नहि सिखलौं पिआरमे हम कोना बेपार करु

नहि कियो बुझलक नहि केकरो हम बुझलौं
एहि दुनिआमे पिआर केकरासँ उधार करु

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१८)
****

100

गुमान जिनका पर छल ओ मुँह मोरि लेलनि
दर्दक इनाम दय खुशीसँ नाता जोरि लेलनि

हमर दर्दकेँ आब तँ ओ समझै छथि मखोल
छनमे हँसि कए हमरासँ नाता तोरि लेलनि

ओ की बुझता पिआर केनाइ ककरा कहैत छै
जे घरी दू घरीमे अपन करेज जोरि लेलनि

पिआरक फूलपर चलब आब ओ की सीखता
विरहकेँ अंगारपर चलब जे छोरि लेलनि

'मनु' नादान हुनका मिसियो भरि नै चिन्हलहुँ
मोनक बात की करेजो हमर ओ फोरि लेलनि

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-१८)
,,

101

सुगँधसँ सराबोर सुगन्धित सुंदर सजनी सुगँधा

आबि हमर ह्रदय बसली अदभुत सुंदरी सुगँधा

जिनक सुगँध चहुदिस नभ-थलकेँ कण-कणमे
हमर रोम-रोममे ओ बसल छथि प्राणेश्वरी सुगँधा

सुरकेँ शियाम जेना राधाक नटवर मुरली वजैया
हमर रोम रोममे जे बसल छथि ओ सगरी सुगँधा

जिनक निसाँमे रचलहुँ हम सुर-सुगन्धित सुगँधा

ओ छथि हमर ह्रदयकेँ रानी प्राणमे बसली सुगँधा

ध्यानमे मानमे जिनकर आनमे अर्पित अछि 'सुगँधा'
भूल हुए तँ माइनो जाएब 'मनु'केँ   सजनी सुगँधा

(सरल वार्णिक बहर, वर्ण-२१)